

199, 17. — n) *Eigenthümlichkeit, Besonderheit*: त्रौह्यत्तरे ऽप्यणुः Anu bezeichnet ein besonderes Korn TRIK. 3, 3, 120. प्रेतः प्राण्यत्तरे (ein besonderes lebendes Wesen) AK. 3, 4, 62. प्राप्तज्ञा युगात्तरम् H. 737. मीना राश्यत्तरे TRIK. 3, 3, 251. पद्मो — संख्यात्तरे 299. वेणुः — न्यात्तरे 138. भावः — अभिनयात्तरे 419. कस्मिंश्चित्कारणात्तरे bei einer besonderen Veranlassung N. 13, 34. = कारणात्तरे R. 3, 34, 4. कारणात्तरात् aus einer besonderen Ursache 4, 9, 28. आतमदशात्तरेषु in ihren besondern, speciellen Zuständen ÇĀK. 77. — o) *Gelegenheit (अवसर)* AK. 3, 4, 189. H. 1509. an. 3, 514. MED. r. 107. एतस्मिन्नत्रे bei dieser Gelegenheit R. 5, 31, 32. = अत्रात्तरे HIT. 7, 20. ÇĀK. 89. यावद्दामिन्द्रगुरुवे निवेदयितुमत्तरान्वेषी भवामि 101, 11. स्थितो ऽहमिदमत्तरम् । सुप्रोचस्य नदीनां च प्रसादं प्रतिपालयन् ॥ R. 4, 27, 19. तदत्तरमहं लब्ध्वा 1, 46, 23. तेन शब्देन (wodurch der in eine Gazelle umgewandelte Rāma sich verräth) रत्तो-भिर्लब्धं किं ध्रुवमत्तरम् 3, 64, 12. एतदत्तरमासाद्य 52, 4. PĀNĀT. 63, 3. वि-अमात्तरमासाद्य zum Ausruhen R. 6, 82, 2. कालात्तरापेत्तिन् die gelegene Zeit beachtend PĀNĀT. III, 236. अत्तरप्रेम्सु R. 4, 5, 3. चित्तापिवा दशप्रोवः क्षिप्रमत्तरमात्मनः (die sich ihm darbietende Gelegenheit) 3, 82, 8. सारणा-स्यात्तरे die von S. dargebotene Gelegenheit) दृष्ट्वा — शुको रावणामवव्रीत् 6, 4, 1. — p) was dem Gegner Gelegenheit zum Angriff giebt, schwache Seite, Blöße: असकृद्भिर्मामिन्त्रैर्नित्यमत्तरदर्शिभिः R. 4, 32, 4. परस्यात्तर-दर्शिना 6, 89, 18. तस्यात्तरमयो दृष्ट्वा 18, 46. अथास्य (mit अत्तरम् zu verbinden) द्वादशे वर्षे दर्श कलिर्त्तरम् N. 7, 2. कनूमो वेति न रात्तो ऽत्तरं न मारुतिस्तस्य च रत्तो ऽत्तरम् R. 5, 44, 9. जिज्ञासतो वीर्यमन्योऽन्यस्यात्तरैषिणो 4, 60, 10. So fasst BHARATA किं AK. 3, 4, 189. auf, da er als Beispiel anführt: प्रहरेदत्तरे रिपुम् ÇKDn. MED. r. 107. führt gleichfalls किं als eine Bedeutung von अत्तर auf. — q) *Stellvertretung*: उरगलत्र-क्ष्मूत्रात्तरः der eine Schlangenhaut an Stelle der Brahmanenschnur trägt ÇĀK. 170, v. 1. — r) *Bürgerschaft* P. 3, 2, 179. अत्तरे च तयोर्धः स्यात् JĀG. 2, 239. तेन तव विद्वपकरणाद्यं जन्मसुकृतमत्तरे धृतम् er leistet mit dem Kapital der guten Werke seiner Existenz (das er auf dich zu übertragen bereit ist) Bürgerschaft PĀNĀT. 213, 24 (Z. 19. ist जन्मसुकृतम् gleichfalls zu verbinden). — s) *Rücksicht (तादर्थ्य)* AK. 3, 4, 189. H. an. 3, 514. MED. r. 107. न चैतद्विष्टं माता मे यदवोचन्मदत्तरम् (GORR. 2, 99, 21: मदत्तरे) R. 2, 90, 16. मदत्तरे aus Rücksicht zu mir, metnetwegen 16, 15. DRAUP. 3, 15. Vgl. अत्तरेण 2, f. — Die Bedeutung अत्तर्धि (AK. 3, 4, 189. H. an. 3, 515. MED. r. 107.) gehört zu अत्तर, da BHARATA zu AK. im ÇKDn. als Beispiel anführt: पर्वतात्तरितो रविः. Bei विना (AK. und MED. a. a. O. H. an. 3, 514.) hat man an अत्तरेण (s. d.) gedacht.

1. अत्तरग्नि (अत्तर + अग्नि) m. das innere Feuer, Verdauungs-, Assimilationskraft SUPR. 2, 181, 2. 306, 12. 323, 3.

2. अत्तरग्नि (wie eben) adj. im Feuer befindlich KAUC. 38.

अत्तरङ्ग (अत्तर + 3. अङ्ग) adj. 1) innerlich (Gegens. बहिरङ्ग) MADHUS. in Ind. St. I, 20, 10. — 2) nahe stehend, verwandt (आत्मीय, स्व-संपर्क): चरमगिरिकुरङ्गीप्रङ्गकापूयनेन स्वपिति मुखमिदानीमत्तरङ्गः कुरङ्गः । KĀLID. im ÇKDn. Kann hier nicht अत्तरङ्ग mit eingezogenen, d. h. mit ansichgezogenen Gliedern bedeuten? — 3) im Thema (3. अङ्ग 7.) befindlich, stattfindend (Gegens. बहिरङ्ग): एकदेशस्वरो ऽत्तरङ्गः P. 8, 2, 6, Vārt. 1. अत्तरङ्गे विस्मर्तनीयः P. 8, 3, 15, Vārt. 2; Sch. कार्यमत्तरङ्गम्

SIDDH. K. zu P. 8, 3, 74. Davon nom. abstr. अत्तरङ्गत्व P. 7, 2, 98, Sch. SIDDH. K. zu P. 6, 1, 135.

अत्तरचक्र (अत्तर + चक्र) n. term. techn. bei der Beobachtung des Vogelfluges VARĀH. BRH. S. Cap. 86. im Verz. d. B. H. 249.

अत्तराण (eine Verkürzung von अत्तरयाण, wie अस्तमन von अस्तमयन) n. क्विरत्तरणो KITJ. ÇĀ. 25, 5, 15.

अत्तरार्तम् (von अत्तर) 1) adv. im Innern: तेन पूतिरत्तरतः ÇĀT. BR. 4, 1, 2, 1. 3, 1, 2, 10. 3, 18. तस्मदित्तुभयमलोकमत्तरतो ऽलोकमा किं योनिरत्तरतः (RÖER: अत्तरः) 14, 4, 2, 11. (= BĀH. ĀR. UP. 1, 4, 6.) अस्वीन्यत्तरतो दाहृणि 6, 9, 32. (= BĀH. ĀR. UP. 3, 9, 28.) तृणामत्तरतः कृत्वा रावणो वाक्यमवव्रीत् R. im Herzen einem Grashalm gleich achtend (verachtend) R. 3, 62, 1. — 2) praep. innerhalb, mit dem gen.: एषो लोकानामत्तरतश्च वाक्यतश्च दिशः ÇĀT. BR. 6, 5, 2, 7.

अत्तरदिशा (अत्तर + दिशा) f. Zwischengegend (der Windrose) VS. 24, 26. — Vgl. अत्तरादिप्र. अत्तरदेश.

अत्तरपूरुष (अत्तर + पूरुष) m. der innere Mensch, die Seele: तास्तु (पापकृत): देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्वैवात्तरपूरुषः M. 8, 85.

अत्तरप्रभव (अत्तर + प्रभव) m. eine dazwischen entstandene Kaste, eine Mischlingskaste: सर्ववर्णानो यथावदनुपूर्वशः । अत्तरप्रभवानो च धर्मान्नो वक्तुमर्हसि ॥ M. 1, 2.

अत्तरय (von इ mit अत्तर) m. Hinderniss: कर्मणा एव अत्तरयाप ÇĀT. BR. 7, 1, 2, 23.

अत्तरयाण (wie eben) n. P. 8, 4, 25. अत्तरयाणो वर्तते, अ० शोभनम् Sch. Untergang, das Verschwinden.

अत्तरयन (अत्तर + अयन) m. N. (?) einer Gegend P. 8, 4, 25. अत्तरयनो देशः Sch.

अत्तरययव (अत्तर + अययव) m. ein innerer Theil P. 5, 4, 62, Sch.

अत्तरस्य (अत्तर + स्य) adj. innerlich: अत्तरस्यैः गुणैः PĀNĀT. I, 232. Vgl. u. 2. अत्तर a.

अत्तरौ (अत्तर + आ; vgl. u. अत्तर 2, a, am Ende) gaṇa स्वरदि. 1) adv. a) mitten inne, darin, dazwischen (Gegens. बहिः): अर्धमत्तरेद-रात् (बहिर्नि मन्त्रयामहे) AV. 9, 13, 9. अर्धेच्चिद्विंशत्यं लोकं ऽत्तरा 10, 7, 28. 11, 10, 34. RV. PRĀT. 4, 6. Nir. 2, 10. प्रादेशो ऽत्तरा (Sch.: अत्तरालं भवति) KITJ. ÇĀ. 5, 3, 10. पोलिन्द्रास्त्वत्तरा (so zu trennen) द्वाः; H. 878. प्रमु-ण्डकमार्गोश्चसर्पनकुलाधुमिः । अत्तरागमने wenn sie dazwischen durch-gehen M. 4, 126. KITJ. ÇĀ. 25, 4, 17. अन्तरे वीजमुत्सृष्टमत्तरैव (darin) वि-नश्यति M. 10, 71. अत्तराभवमत्रे — गन्धर्वः AK. 3, 4, 135. hinein: स्तोत्रम-त्तरा गत्वा ÇĀK. 8, 9, v. 1. für अत्तरम्. अत्तरा स्यां sich dazwischenstellen, sich entgegensetzen: तत्र पथत्तरा मृत्युर्पदि मेन्द्रा दिवैकसः । स्यास्यति तानपि रणे वाकुत्स्थो निह्निष्यति ॥ R. 5, 34, 5. — b) auf dem Wege, unterwegs: क्षिप्रमुत्पततो मन्ये सीतामादाय रत्तसः । प्रच्युता रावणस्या-ङ्कादत्तरा पतिता भुवि ॥ R. 5, 15, 27. अप्राप्ति योजनशते नात्तरा (so zu tren-nen) स्थैर्यामित्युत (प्रातिज्ञातम्) 7, 54. अथाश्रमं समन्विष्य अत्तरा रघुनन्द-नः । परिप्रचच्छ सौमित्रिम् 3, 66, 1. 20, 1. JĀG. 2, 107. ÇĀK. 90, 10. MĀLAV. 8, 18. — c) in der Nähe H. an. 7, 58. MED. avj. 70. यदत्तरा परावर्तमधी-वर्तं च ह्युसै । इन्द्रेह तत् आ गच्छे RV. 3, 40, 9. न द्रव्यानः पुनर्वीतु धा-र्मिकं राममत्तरा (in unserer Nähe, unter uns) R. 2, 57, 13. — d) beinahe: तत्र चाद्यावच्छत्रुस्तव जीवितमत्तरा R. 2, 11, 17. — e) in der Zwischen-